Annapurna Chalisa Lyrics with Meaning in English and Hindi

Annapurna Chalisa Lyrics in Hindi

॥ दोहा ॥
विश्वेश्वर पदपदम की रज निज शीश लगाय । अन्नपूर्णे, तव सुयश बरनौं कवि मतिलाय ।

॥ चौपाई ॥
नित्य आनंद करिणी माता, वर अरु अभय भाव प्रख्याता ॥

जय ! सौंदर्य सिंधु जग जननी, अखिल पाप हर भव-भय-हरनी ॥

श्वेत बदन पर श्वेत बसन पुनि, संतन तुव पद सेवत ऋषिमुनि ॥

काशी पुराधीश्वरी माता, माहेश्वरी सकल जग त्राता ॥

वृषभारुढ़ नाम रुद्राणी, विश्व विहारिणि जय ! कल्याणी ॥

पतिदेवता सुतीत शिरोमणि, पदवी प्राप्त कीन्ह गिरी नंदिनि ॥

पति विछोह दुःख सहि नहिं पावा, योग अग्नि तब बदन जरावा ॥

देह तजत शिव चरण सनेहू, राखेहु जात हिमगिरि गेहू ॥

प्रकटी गिरिजा नाम धरायो, अति आनंद भवन मँह छायो ॥

नारद ने तब तोहिं भरमायहु, ब्याह करन हित पाठ पढ़ायहु ॥

ब्रहमा वरुण कुबेर गनाये, देवराज आदिक कहि गाये ॥

सब देवन को सुजस बखानी, मति पलटन की मन मँह ठानी ॥

अचल रहीं तुम प्रण पर धन्या, कीहनी सिद्ध हिमाचल कन्या ॥

निज कौ तब नारद घबराये, तब प्रण पूरण मंत्र पढ़ाये ॥

करन हेतु तप तोहिं उपदेशेउ, संत बचन तुम सत्य परेखेहु ॥

गगनगिरा सुनि टरी न टारे, ब्रहां तब तुव पास पधारे ॥

कहेउ पुत्रि वर माँगु अनूपा, देहुँ आज तुव मति अनुरुपा ॥

तुम तप कीन्ह अलौकिक भारी, कष्ट उठायहु अति सुकुमारी ॥

अब संदेह छाँड़ि कछु मोसों, है सौगंध नहीं छल तोसों ॥

करत वेद विद ब्रहमा जानहु, वचन मोर यह सांचा मानहु ॥

तजि संकोच कहहु निज इच्छा, देहौं मैं मनमानी भिक्षा ॥

सुनि ब्रहमा की मधुरी बानी, मुख सों कछु मुसुकाय भवानी ॥

बोली तुम का कहहु विधाता, तुम तो जगके स्रष्टाधाता ॥

मम कामना गुप्त नहिं तोंसों, कहवावा चाहहु का मोंसों ॥

दक्ष यज्ञ महँ मरती बारा, शंभुनाथ पुनि होहिं हमारा ॥

सो अब मिलहिं मोहिं मनभाये, कहि तथास्तु विधि धाम सिधाये ॥

तब गिरिजा शंकर तव भयऊ, फल कामना संशयो गयऊ ॥

चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा, तब आनन महँ करत निवासा ॥

माला पुस्तक अंकुश सोहै, कर मँह अपर पाश मन मोहै ॥

अन्न्पूर्णे ! सदापूर्णे, अज अनवघ अनंत पूर्णे ॥

कृपा सागरी क्षेमंकरि माँ, भव विभूति आनंद भरी माँ ॥

कमल विलोचन विलसित भाले, देवि कालिके चण्डि कराले ॥

तुम कैलास मांहि है गिरिजा, विलसी आनंद साथ सिंधुजा ॥

स्वर्ग महालक्ष्मी कहलायी, मर्त्य लोक लक्ष्मी पदपायी ॥

विलसी सब मँह सर्व सरुपा, सेवत तोहिं अमर पुर भूपा ॥

जो पढ़िहहिं यह तव चालीसा, फल पाइंहहि शुभ साखी ईसा ॥

प्रात समय जो जन मन लायो, पढ़िहहिं भक्ति सुरुचि अघिकायो ॥

स्त्री कलत्र पति मित्र पुत्र युत, परमैश्रवर्य लाभ लहि अद्भुत ॥

राज विमुख को राज दिवावै, जस तेरो जन सुजस बढ़ावै ॥

पाठ महा मुद मंगल दाता, भक्त मनोवांछित निधि पाता ॥

॥ दोहा ॥
जो यह चालीसा सुभग, पढ़ि नावैंगे माथ ।
तिनके कारज सिद्ध सब, साखी काशी नाथ ॥

Annapurna Chalisa Meaning in Hindi

॥ दोहा ॥
विश्वेश्वर पदपदम की रज निज शीश लगाय । अन्नपूर्णे, तव सुयश बरनौं कवि मतिलाय ॥

- हे विश्वेश्वर की चरण रज ! मैं उसे अपने मस्तक पर धारण करता हूँ।
- हे माता अन्नपूर्णा ! मैं अपनी बुद्धि के अनुसार आपकी महिमा का वर्णन करता हूँ।

॥ चौपाई ॥
नित्य आनंद करिणी माता, वर अरु अभय भाव प्रख्याता ॥

- हे माता ! आप हमेशा आनंद देने वाली हैं। आप वरदान और अभय (निडरता) प्रदान करने वाली के रूप में प्रसिद्ध हैं।

जय ! सौंदर्य सिंधु जग जननी, अखिल पाप हर भव-भय-हरनी ॥

- जय हो ! हे जगत जननी, जो सौंदर्य का महासागर हैं। आप सभी पापों और संसार के भय को हरने वाली हैं।

श्वेत बदन पर श्वेत बसन पुनि, संतन तुव पद सेवत ऋषिमुनि ॥

- आपके उज्ज्वल मुख पर सफेद वस्त्र शोभित हैं। संत और ऋषि-मुनि आपके चरणों की सेवा करते हैं।

काशी पुराधीश्वरी माता, माहेश्वरी सकल जग त्राता ॥

- हे काशी की अधीश्वरी माता ! आप माहेश्वरी (शिव पत्नी) और संपूर्ण जगत की रक्षक हैं।

वृषभारुढ़ नाम रुद्राणी, विश्व विहारिणि जय ! कल्याणी ॥

- आप वृषभ (बैल) पर सवार हैं और रुद्राणी (शिव की शक्ति) के नाम से जानी जाती हैं। आप संसार में विचरण करने वाली कल्याणकारी देवी हैं।

पतिदेवता सुतीत शिरोमणि, पदवी प्राप्त कीन्ह गिरी नंदिनि ॥

- आप पतिव्रता नारियों में शिरोमणि हैं। गिरीराज (हिमालय) की पुत्री, आपने यह उच्च पद प्राप्त किया है।

पति विछोह दुःख सहि नहिं पावा, योग अग्नि तब बदन जरावा ॥

- आपने अपने पति शिव से वियोग का दुःख सहन नहीं किया और योगाग्नि से अपने शरीर को जला दिया।

देह तजत शिव चरण सनेहू, राखेहु जात हिमगिरि गेहू ॥

- आपने शरीर त्यागकर शिव के चरणों में प्रेम दिखाया, और फिर हिमालय के घर में जन्म लिया।

प्रकटी गिरिजा नाम धरायो, अति आनंद भवन मँह छायो ॥

- आप प्रकट होकर 'गिरिजा' नाम से जानी गईं और आपके जन्म से हिमालय का भवन आनंदमय हो गया।

नारद ने तब तोहिं भरमायहु, ब्याह करन हित पाठ पढ़ायहु ॥

- तब नारद मुनि ने आपको भ्रम में डालकर विवाह के लिए उपाय बताए।

ब्रहमा व रुण कुबेर गनाये, देवराज आदिक कहि गाये ॥

- ब्रह्मा, वरुण, कुबेर और इंद्र जैसे देवताओं ने आपकी महिमा गाकर आपको प्रेरित किया।

सब देवन को सुजस बखानी, मति पलटन की मन मँह ठानी ॥

- सभी देवताओं ने आपके शुभ यश का बखान किया और आपके मन में विचार परिवर्तन का संकल्प लिया।

अचल रहीं तुम प्रण पर धन्या, कीहनी सिद्ध हिमाचल कन्या ॥

- आप अपने प्रण पर अडिग रहीं, जिससे आप धन्य हुईं और हिमालय की पुत्री के रूप में प्रसिद्ध हुईं।

निज कौ तब नारद घबराये, तब प्रण पूरण मंत्र पढ़ाये ॥

- नारद मुनि ने घबराते हुए आपको प्रण पूरा करने के लिए मंत्रों का उपदेश दिया।

करन हेतु तप तोहिं उपदेशेउ, संत बचन तुम सत्य परेखेहु ॥

- उन्होंने तपस्या करने का उपदेश दिया, और आप संतों के वचनों को सत्य मानते हुए तप में लीन हो गईं।

गगनगिरा सुनि टरी न टारे, ब्रहां तब तुव पास पधारे॥

- आकाशवाणी सुनकर भी आपने अपना तप नहीं छोड़ा। तब ब्रह्मा स्वयं आपके पास आए।

कहेउ पुत्रि वर माँगु अनूपा, देहुँ आज तुव मति अनुरुपा॥

- ब्रह्मा ने कहा, "हे पुत्री! जो अनुपम वरदान चाहती हो, मांगो। आज मैं तुम्हारी इच्छा के अनुरूप वरदान दूंगा।"

तुम तप कीन्ह अलौकिक भारी, कष्ट उठायहु अति सुकुमारी॥

- आपने अलौकिक तपस्या की और अनेक कष्ट सहन किए, हालांकि आप अत्यंत कोमल थीं।

अब संदेह छाँड़ि कछु मोसों, है सौगंध नहीं छल तोसों॥

- अब मुझ पर संदेह छोड़ दो। मैं तुम्हें शपथ देता हूँ कि मैं तुमसे छल नहीं कर रहा हूँ।

करत वेद विद ब्रहमा जानहु, वचन मोर यह सांचा मानहु॥

- मैं ब्रह्मा, वेदों का जानकार हूँ। मेरे वचनों को सत्य मानो।

तजि संकोच कहहु निज इच्छा, देहौं मैं मनमानी भिक्षा॥

- अपनी झिझक छोड़कर अपनी इच्छा व्यक्त करो। मैं तुम्हारी मनचाही भिक्षा दूंगा।

सुनि ब्रहमा की मधुरी बानी, मुख सों कछु मुसुकाय भवानी॥

- ब्रह्मा की मधुर वाणी सुनकर देवी भवानी के मुख पर हल्की मुस्कान आ गई।

बोली तुम का कहहु विधाता, तुम तो जगके स्रष्टाधाता ॥

- देवी भवानी बोलीं, “हे विधाता ! मैं आपको क्या बताऊं, आप तो स्वयं इस संसार के रचयिता हैं।”

मम कामना गुप्त नहिं तोंसों, कहवावा चाहहु का मोंसों ॥

- “मेरी कामना आपसे छिपी हुई नहीं है। मैं आपसे क्या कहलवाना चाहती हूँ ?”

दक्ष यज्ञ महँ मरती बारा, शंभुनाथ पुनि होहिं हमारा ॥

- “दक्ष के यज्ञ में मैं पहले ही अपना शरीर त्याग चुकी हूँ। अब मैं चाहती हूँ कि शिवनाथ पुनः मेरे पति बनें।”

सो अब मिलहिं मोहिं मनभाये, कहि तथास्तु विधि धाम सिधाये ॥

- “अब वही मुझे पुनः प्राप्त हों।” ब्रह्मा ने “तथास्तु” कहकर वरदान दे दिया और अपने धाम लौट गए।

तब गिरिजा शंकर तव भयऊ, फल कामना संशयो गयऊ ॥

- इसके बाद गिरिजा (पार्वती) और शिव का मिलन हुआ। उनकी कामना पूरी हुई और सभी शंकाएं समाप्त हो गईं।

चन्द्रकोटि रवि कोटि प्रकाशा, तब आनन महँ करत निवासा ॥

- उनके मुखमंडल में करोड़ों चंद्रमा और सूर्य के समान प्रकाश विद्यमान हो गया।

माला पुस्तक अंकुश सोहै, कर मँह अपर पाश मन मोहै ॥

- उनके हाथों में माला, पुस्तक और अंकुश शोभित होते हैं। उनके अन्य हाथों में पाश है, जो मन को मोह लेता है।

अन्नपूर्णे ! सदापूर्णे, अज अनवघ अनंत पूर्णे ॥

- हे अन्नपूर्णा ! आप सदा से पूर्ण हैं। आप अजात (जिसका जन्म न हो), अनवद्य (निर्दोष) और अनंत हैं।

कृपा सागरी क्षेमंकरि माँ, भव विभूति आनंद भरी माँ॥

- हे कृपा की सागर और कल्याण करने वाली माता ! आप संसार की विभूतियों और आनंद से भरपूर हैं।

कमल विलोचन विलसित भाले, देवि कालिके चण्डि कराले॥

- आपके कमल के समान नेत्र और चमकता हुआ ललाट है। हे कालिका और चंडी, आप विकराल रूप वाली भी हैं।

तुम कैलास मांहि है गिरिजा, विलसी आनंद साथ सिंधुजा॥

- हे गिरिजा ! आप कैलाश पर्वत पर स्थित हैं और समुद्र कन्या (गंगा) के साथ आनंदमय स्थिति में रहती हैं।

स्वर्ग महालक्ष्मी कहलायी, मर्त्य लोक लक्ष्मी पदपायी॥

- स्वर्ग में आप महालक्ष्मी के रूप में पूजी जाती हैं, और पृथ्वी पर आप लक्ष्मी के रूप में सम्मानित हैं।

विलसी सब मँह सर्व सरुपा, सेवत तोहिं अमर पुर भूपा॥

- आप सभी रूपों में समाई हुई हैं। अमरपुरी के राजा (देवता) आपकी सेवा करते हैं।

जो पढ़िहहिं यह तव चालीसा, फल पाइंहहि शुभ साखी ईसा॥

- जो भी आपकी इस चालीसा का पाठ करेगा, उसे शुभ फल प्राप्त होगा। इस पर ईश्वर साक्षी हैं।

प्रात समय जो जन मन लायो, पढ़िहहिं भक्ति सुरुचि अघिकायो॥

- जो व्यक्ति प्रात:काल ध्यानपूर्वक आपकी चालीसा का पाठ करेगा, उसकी भक्ति और रुचि में वृद्धि होगी।

स्त्री कलत्र पति मित्र पुत्र युत, परमैश्वर्य लाभ लहि अद्भुत ॥

- वह व्यक्ति पत्नी, मित्र, पुत्र और अन्य रिश्तों सहित दिव्य संपत्तियों का अद्भुत लाभ प्राप्त करेगा।

राज विमुख को राज दिवावै, जस तेरो जन सुजस बढ़ावै ॥

- जो व्यक्ति राजसत्ता से वंचित है, उसे राजसत्ता प्राप्त होगी। आपका भक्त आपके यश को बढ़ाएगा।

पाठ महा मुद मंगल दाता, भक्त मनोवांछित निधि पाता ॥

- यह पाठ अत्यंत आनंददायक और शुभ फल देने वाला है। इसका पाठ करने वाला भक्त अपनी सभी इच्छाओं की पूर्ति करता है।

॥ दोहा ॥
जो यह चालीसा सुभग, पढ़ि नावैंगे माथ।

- जो भी इस पवित्र चालीसा का पाठ कर अपने मस्तक पर धारण करेगा,

तिनके कारज सिद्ध सब, साखी काशी नाथ ॥

- उसके सभी कार्य सिद्ध होंगे। इस पर स्वयं काशी नाथ (भगवान शिव) साक्षी हैं।

Annapurna Chalisa Lyrics in English

॥ Doha ॥
Vishweshwar padapadam ki raj, nij sheesh lagaay.
Annapoornay, tav suyash baranau, kavi mati laay.

॥ Chaupai ॥
Nitya anand karini maata, var aru abhay bhaav prakhyaata.

Jai! Saundarya sindhu jag janani, akhil paap har bhav-bhay harani.

Shvet badan par shvet basan puni, santan tuv pad sevat rishimuni.

Kaashi puraadhiishwari maata, maaheshwari sakal jag traata.

Vrishabharudh naam rudraani, vishwa vihaarini, jai! kalyaani.

Patidevta suteet shiromani, padvi praapt keenh giri nandini.

Pati vichhoh dukh sahi nahin paava, yog agni tab badan jarava.

Deh tajat shiv charan sneh, raakhehu jaat himgiri geh.

Prakati Girija naam dharaayo, ati anand bhavan mahin chhaayo.

Naarad ne tab tohin bharmaayahu, byaah karan hit paath padhaayahu.

Brahmaa, Varun, Kuber ganaaye, Devaraj aadik kahi gaaye.

Sab devan ko sujas bakhani, mati palatan ki man mahin thaani.

Achal rahi tum pran par dhanya, keehani siddh Himachal kanya.

Nij kau tab Naarad ghabraye, tab pran pooran mantra padhaaye.

Karan hetu tap tohin updesheu, sant bachan tum satya parekhehu.

Gagangira suni tari na taare, Brahma tab tuv paas padhaare.

Kaheyu putri var maangu anoopa, dehu aaj tuv mati anooroopa.

Tum tap keenh alaukik bhaari, kasht uthaayahu ati sukumari.

Ab sandeh chhaandi kachu moson, hai saugandh nahin chhal toson.

Karat ved vid Brahma jaanahu, vachan mor yah saanchaa maanahu.

Taji sankoch kahahu nij ichha, dehu main manmaani bhiksha.

Suni Brahma ki madhuri baani, mukh son kachu muskaay Bhavani.

Boli tum kaa kahahu vidhata, tum to jagke srashtadhata.

Mam kaamana gupt nahin toson, kahvaava chahahu kaa moson.

Daksh yagya mahin marti baara, Shambhunath puni hohin hamaara.

So ab milahin mohin manbhaaye, kahi tathastu vidhi dhaam sidhaaye.

Tab Girija Shankar tav bhayahu, phal kaamana sanshayo gayahu.

Chandrakoti ravi koti prakaasha, tab aanan mahin karat nivaasa.

Maala pustak ankush sohai, kar mahin apar paash man mohai.

Annapoornay! sadaapoornay, aj anavadh anant poornay.

Kripa saagari kshemaankari maa, bhav vibhooti anand bhari maa.

Kamal vilochan vilasit bhaale, Devi Kalike Chandi karaale.

Tum Kailaas maahin hai Girija, vilasi anand saath Sindhuja.

Swarg Mahaalakshmi kahlaayi, martya lok Lakshmi pad paayi.

Vilasi sab mahin sarv saroopa, sevat tohin amar pur bhoopa.

Jo padhihehin yah tav chaalisa, phal paaihinhi shubh saakhi Eesa.

Praat samay jo jan man laayo, padhihehin bhakti suruchi aghikaayo.

Stree kalatra pati mitra putra yut, parmaishvary laabh lahi adbhut.

Raaj vimukh ko raaj divaavai, jas tero jan sujas badhaavai.

Paath maha mud mangal daata, bhakt manovaanchhit nidhi paata.

□ Doha □
Jo yah chaalisa subhag, padhi naavainge maath.
Tinke kaaraj siddh sab, saakhi Kaashi Naath.

Annapurna Chalisa Meaning in English

□ Doha □
Vishweshwar padapadam ki raj, nij sheesh lagaay.

- I bow my head and honor the sacred dust of Lord Vishweshwar’s feet.

Annapoornay, tav suyash baranau, kavi mati laay.

- O Goddess Annapurna, I sing your glory according to my humble knowledge and poetic

inspiration.

□ Chaupai □
Nitya anand karini maata, var aru abhay bhaav prakhyaata.

- O Mother! You are the giver of eternal joy and are famous for granting boons and fearlessness.

Jai! Saundarya sindhu jag janani, akhil paap har bhav-bhay harani.

- Hail! O Mother of the universe, an ocean of beauty! You destroy all sins and remove the fear of worldly existence.

Shvet badan par shvet basan puni, santan tuv pad sevat rishimuni.

- Your radiant face is adorned with white garments, and saints and sages serve at your feet.

Kaashi puraadhiishwari maata, maaheshwari sakal jag traata.

- O Mother, the ruler of Kashi! You are Maheshwari (the consort of Shiva) and the savior of the entire world.

Vrishabharudh naam rudraani, vishwa vihaarini, jai! kalyaani.

- You ride on a bull and are known as Rudrani, the consort of Rudra. You roam the universe and bestow well-being upon all.

Patidevta suteet shiromani, padvi praapt keenh giri nandini.

- You are the crown jewel of all virtuous wives. As the daughter of the Himalayas, you attained this exalted position.

Pati vichhoh dukh sahi nahin paava, yog agni tab badan jarava.

- Unable to bear the pain of separation from your husband (Lord Shiva), you burned your body in the fire of yoga.

Deh tajat shiv charan sneh, raakhehu jaat himgiri geh.

- After relinquishing your body, your soul’s love for Shiva remained, and you were reborn in the house of the Himalayas.

Prakati Girija naam dharaayo, ati anand bhavan mahin chhaayo.

- You appeared in the world as Girija, bringing immense joy to the household of the Himalayas.

Naarad ne tab tohin bharmaayahu, byaah karan hit paath padhaayahu.

- Sage Narada then guided you and gave you instructions on how to marry Lord Shiva.

Brahmaa, Varun, Kuber ganaaye, Devaraj aadik kahi gaaye.

- Gods like Brahma, Varuna, and Kubera, along with Indra, praised your divine virtues.

Sab devan ko sujas bakhani, mati palatan ki man mahin thaani.

- The gods extolled your glory and resolved to influence your destiny in a favorable way.

Achal rahi tum pran par dhanya, keehani siddh Himachal kanya.

- You remained steadfast in your vow and became renowned as the blessed daughter of the Himalayas.

Nij kau tab Naarad ghabraye, tab pran pooran mantra padhaaye.

- Sage Narada became concerned and chanted mantras to help you fulfill your vow.

Karan hetu tap tohin updesheu, sant bachan tum satya parekhehu.

- To achieve your goal, you were advised to perform intense penance, which you accepted as truth from the wise.

Gagangira suni tari na taare, Brahma tab tuv paas padhaare.

- Hearing a celestial voice, you did not waver from your penance. Eventually, Brahma himself came to you.

Kaheyu putri var maangu anoopa, dehu aaj tuv mati anuroopa.

- Brahma said, “O daughter, ask for any unparalleled boon today, and I will grant it according to your wish.”

Tum tap keenh alaukik bhaari, kasht uthaayahu ati sukumari.

- You performed an extraordinary penance, enduring great hardships despite being very delicate and gentle.

Ab sandeh chhaandi kachu moson, hai saugandh nahin chhal toson.

- Brahma assured you, “Now abandon all doubt. I swear to you that I will not deceive you.”

Karat ved vid Brahma jaanahu, vachan mor yah saanchaa maanahu.

- “As a knower of the Vedas, I, Brahma, speak the truth. Believe my words to be genuine.”

Taji sankoch kahahu nij ichha, dehu main manmaani bhiksha.

- "Cast away hesitation and express your desire. I shall grant you the boon of your choice."

Suni Brahma ki madhuri baani, mukh son kachu muskaay Bhavani.

- Hearing Brahma's sweet words, Bhavani smiled softly.

Boli tum kaa kahahu vidhata, tum to jagke srashtadhata.

- She replied, "O Creator! What can I say to you? You are the one who created the entire universe."

Mam kaamana gupt nahin toson, kahvaava chahahu kaa moson.

- "My wish is not hidden from you. What more do you want me to tell you?"

Daksh yagya mahin marti baara, Shambhunath puni hohin hamaara.

- "I sacrificed my life during Daksha's yajna. Now I desire to be reunited with Lord Shiva."

So ab milahin mohin manbhaaye, kahi tathastu vidhi dhaam sidhaaye.

- Brahma granted her wish by saying "Tathastu" (so be it) and returned to his heavenly abode.

Tab Girija Shankar tav bhayahu, phal kaamana sanshayo gayahu.

- Eventually, Girija (Parvati) was united with Lord Shiva, and all her desires were fulfilled.

Chandrakoti ravi koti prakaasha, tab aanan mahin karat nivaasa.

- Her face shone with the brilliance of millions of suns and moons combined.

Maala pustak ankush sohai, kar mahin apar paash man mohai.

- A garland, a book, and an ankush (hook) adorn you, while another hand holds a noose that captivates the mind.

Annapoornay! sadaapoornay, aj anavadh anant poornay.

- O Annapurna! You are eternally complete, unborn, infinite, and endless.

Kripa saagari kshemaankari maa, bhav vibhooti anand bhari maa.

- O Mother, you are the ocean of compassion and the one who bestows well-being. You are filled with the bliss of divine prosperity.

Kamal vilochan vilasit bhaale, Devi Kalike Chandi karaale.

- Your lotus-like eyes and shining forehead radiate divine beauty. O Goddess Kalika, you also manifest as the fierce Chandi.

Tum Kailaas maahin hai Girija, vilasi anand saath Sindhuja.

- O Girija! You reside on Mount Kailash, enjoying divine bliss alongside the river goddess Ganga (Sindhuja).

Swarg Mahaalakshmi kahlaayi, martya lok Lakshmi pad paayi.

- In the heavens, you are worshipped as Mahalakshmi, and on earth, you are revered as Goddess Lakshmi.

Vilasi sab mahin sarv saroopa, sevat tohin amar pur bhoopa.

- You manifest in all forms throughout the universe, and the rulers of heaven serve you with devotion.

Jo padhihehin yah tav chaalisa, phal paaihinhi shubh saakhi Eesa.

- Whoever recites this Chalisa will attain auspicious results, with Lord Shiva as a divine witness to this promise.

Praat samay jo jan man laayo, padhihehin bhakti suruchi aghikaayo.

- Those who recite it with focus and devotion in the morning will experience an increase in faith and virtue.

Stree kalatra pati mitra putra yut, parmaishvary laabh lahi adbhut.

- They will enjoy happiness in their relationships, including spouses, friends, and children, along with divine wealth and prosperity.

Raaj vimukh ko raaj divaavai, jas tero jan sujas badhaavai.

- Those deprived of royal fortune will regain it by your grace, and your devotees will spread your glory.

Paath maha mud mangal daata, bhakt manovaanchhit nidhi paata.

- This sacred text brings immense joy and good fortune. Devotees who recite it will have their desires fulfilled.

□ Doha □

Jo yah chaalisa subhag, padhi naavainge maath.

- Whoever reads this holy Chalisa and bows their head in reverence,

Tinke kaaraj siddh sab, saakhi Kaashi Naath.

- All their tasks will be successfully completed, with Lord Kashi Nath (Shiva) as the witness.